भूमिका

संगणक भाषाविज्ञान में जहाँ एक तरफ प्राकृतिक तथा कृत्रिम बुद्धि की प्रक्रियाओं के तत्वों का समावेश होता है वहीँ दूसरी तरफ सम्प्रेष्ण विज्ञान के व्याकरण तथा सूचना विज्ञान के तर्क सिद्धांत का समावेश रहता है। मशीन अनुवाद अनुवाद का एक नया आयाम है। यह भाषा के व्याकरण को प्रौद्योगिकी से जोड़ता है तथा भाषा के नियमों को एक बिल्कुल नए ढंग से विश्लेषित व प्रस्तुत करने की मांग करता है। मशीनी अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का व्यावहारिक पक्ष है। विश्व में मैथिलिभाषियों की संख्या लगभग 47.9 मिलियन है। मैथिलि भारत , नेपाल तथा बंगलादेश के बोली जाती है। नेपाल की यह दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसके साहित्य का इतिहास **700–1350 ई.पू** पुराना है। मैथिलि एक समृद्ध भाषा है फिर भी इसके समुचित प्रचार-प्रसार न होने के कारण इसके साहित्य तथा लेखों के अनुवादों की कमी है।

किसी भी ज्ञान की सार्थकता उसके अनुप्रयोग में होती है। 'अनुप्रयोग' शब्द का सामान्य अर्थ यह है की जो कुछ भी हमने अध्ययन -विश्लेषण में प्राप्त कर लिया है उसका व्यावहारिक जीवन में कही न कहीं प्रयोग करना। मशीनी अनुवाद का युग 1960 के दशक से आरंभ हुआ है ,भारत में मंत्र , अनुसारक ,आंग्लभारती ,आदि मशीनी अनुवाद के सॉफ्टवेयरों का विकास भी हुआ है फिर भी विभिन्न भाषाओं को मशीनी अनुवाद से जोड़ा जाना बाकी है।

मोजेज़ एक सांख्यिकीय आधारित आधारित मशीनी अनुवाद तंत्र है। यह किसी भी भाषा जोड़ी को अनुवाद मॉडल में प्रशिक्षित करता है। इसे 2005 में एडिनबरा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया था। मोजेज़ द्वारा इसके इसके साहित्य का अनुवाद करके इसे सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।

कॉर्पस भाषाविज्ञान एक बहुआयामी क्षेत्र है। भाषा अध्ययन के लिए कॉर्पस का परिचय और अनुप्रयोग भाषाविज्ञान में एक नए आयाम के रूप में शामिल किया गया है। सैद्धांतिक रूप में, कॉर्पस भाषाविज्ञान एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य पाठों के नमूनों के बड़े संग्रहों का विश्लेषण करके भाषा और उसके सभी गुणों की जांच करना है। आज यह दृष्टिकोण शोध के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है, जैसे : भाषा का वर्णनात्मक अध्ययन, मशीनी अनुवाद, भाषा शिक्षण और कोश निर्माण आदि।

यह मोटे तौर पर वाचिक और लिखित पाठ नमूनों के विस्तृत प्रामाणिक विश्लेषण को संदर्भित करता है। मोजेज़ द्वारा इसके इसके साहित्य का अनुवाद करके इसे सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।